दुर्गा दुर्गेय महदुष्टजन संहारे
दुर्गांतर्गत दुर्गे दुर्लभे सुलभे
दुर्गमयवागिदे निन्न महिमे भोम्म
भर्गादिगळिगेल्ल गुणिसिदरू
स्वर्गभूमि पाताळ समस्त व्यापुत देवि
वर्गक्के मीरिद बलुसुंदरी
दुर्गणदवर बाधे बहळवागिदे तायि
दुर्गतिहारे नानु पेळुवुदेनु
दुर्गंधवागिदे संसइति नोडिदरे
निर्गम ना काणेनम्म मंगळांगे
दुर्गे हे दुर्गे महादुर्गे भूदुर्गे विष्णु
दुर्गे दुर्जये दुर्धषे शक्ति
दुर्ग कानन गहन पर्वत घोर सर्प
गर्गर शब्ध व्याप्र करडि मृत्यु
वर्ग भूतप्रेत पैशाचि वोदलाद
दुर्गण संकट प्राप्तवागे
दुर्गादुर्गे एंदु उच्चस्वरदिंद
निर्गळितनागि ओम्मे कूगिदरू
स्वर्गापवर्गदल्लि हरियोडने इद्दरु
सुर्गण जयजयवेंदु पोगळु तिरे
कर्गळिंदलि एत्ति साकुव साक्षिभूते

www.jousigma.com

नीर्गुडिदंते लोकलीले निनगे
स्वर्गंगाजनक नम्म विजय विठ्ठलनंघ्रि
दुर्गाश्रयमाडि बदुकुवंते माडु
अरिदरांकुश शक्ति परशु नेगलि खड्ग
सरसिज गदे मुद्गर चाप मार्गण
वर अभय मुसल परि परि आयुधव
धरिसि मेरेव लकुमि सरसिजभव रुद्र
सरुव देवतेगळ करुणा पांगदल्लि
निरीक्षिसि अवरवर स्वरूपसुख कोडुव
सिरि भूमिदुर्गा सरुवोत्तम
नम्म विजय विठ्ठलनंघ्रि
परम भकुतियिंद स्मरिसुव जगज्जननि
स्तुतिमाडुवे निन्न काळि महाकाळि उ
न्नत बाहु कराळवदने चंदिरमुखे
धृतिशांति बहुरूपे रात्रि रात्रि चरणे
स्थितिये निद्राभद्रे भक्तवत्सले भव्ये
चतुरष्टद्विहस्ते हस्ति हस्तिगमने अ
द्भुत प्रबले प्रवासि दुर्गारण्यवासे
क्षितिभार हरणे क्षीराब्धितनेये स
द्गति प्रेदाते माया श्रीये इंदिरे रमे
दितिजात निग्रहे निर्धूत कल्मषे

www.sousigma.com

प्रतिकूल भेदे पूर्ण भोधे रौद्रे
अतिशय रक्त जिह्वालोले माणिक्य माले
जितकामे जनन मरण रहिते ख्याते
घृतपात्र परमान्न तांबूलहस्ते सु
व्रते पतिव्रते त्रिनेत्रे शक्तांबरे
शतपत्रनयने निरुत कन्ये उदयार्क
शतकोटि सन्निभे हरियांक संस्ने
श्रुति तति नुते शुक्ल शोणित रहिते अ
प्रतिहते सर्वदा संचारिणि चतुरे
चतुर कपर्दिये अंभ्रणि ह्री
उत्पति स्थितिलय कर्ते शुभ्र शोभन मूर्ते
पतितपावने धन्ये सर्वोषधियलिद्दु
हतमाडु काडुव रोगंगळिंद
क्षितियोळु सुखदल्लि बाळुव मति इत्तु
सतत कायलिबेकु दुर्गेदुर्गे
च्युतदूर विजय विट्ठलरेयन प्रीये
कृतांजलियिंदलि तलेबागि नमिसुवे
श्री लक्ष्मि कमल पद्मा पद्मिनि कम
लालये रमा वृषाकपि धन्य वृद्दि वि
शाल यज्ञा इंदिरे हिरण्य हरिणि
वालय सत्यनित्यानंत त्रयि सुधा

शीले सुगंध सुंदरि विद्यासुशीले
सुलक्षण देवि नाना रूपगळिंद मेरेव मृत्युनाशे
वालगकोडु संतर सन्निधियल्लि
कालकालके एन्न भारपोहिसुव तायि
मेलु मेलु निन्न शक्ति कीर्ति बलु
केळि केळि बंदे केवल ई मन
गाळियंते परद्रव्यक्के पोपुदु
एळल माडदे उद्धार माडुव
कैलास पुरदल्लि पूजेगोंब देवि
मूल प्रकइति सर्व वर्णाभिमानिनि
पालसागर शायि विजयविठलनोळु
लीले माडुव नानाभरणे भूषणे पूर्णे
गोपिनंदने मुक्ते दैत्यसंतति सं
तापव कोडुतिप्प महाकठोरे उग्र
रूप वैलक्षणे अज्ञानक्केभिमानिनि
तापत्रय विनाशे ओंकारे होंकारे
पापिकंसगे भय तोरिदे बाललीले
व्यापुते धर्म मार्ग प्रेरणे अप्राकृते
स्वप्नदलि निन्न नेनेसिद शरणनिगे
अपारवागिद्द वारिधियंते महा
आपत्तुबंदिरलु हारि पोगोवु सप्त

द्वीप नायिके नरक निर्लेपे तमोगुणद
व्यापार माडिसि भक्तजनके पुण्य
सोपान माडिकोडुव सौभाग्यवंते दुर्गे
प्रापुतवागि एन्न मनदल्लि निंदु दुःख
कूपदिंदलि एत्ति कडेमाडु जन्मंगळु
सौपर्णि मिगिलाद सतियरु नित्य निन्न
आपादमौळि तनक भजिसि भव्यरादरु
ना पेळुवुदेनु पांडवर मनोभीष्टे
ई पांचभौतिकदल्लि आव साधन काणे
श्रीपतिनाम ओन्दे जिह्वाग्रहदलि नेनेव
औपासन कोडु रुद्रादिगळ वरदे
तापसजन प्रीय विजय विठ्ठल मूर्तिय
श्रीपादार्चने माळ्व श्री भू दुर्गावर्णाश्रय
दुर्गे हा हे हो हा दुर्गे मंगळ दुर्गे
दुर्गति कोडदिरु विजय विठ्ठल प्रीये